part 3

5th PAPER

Ques. सामवेद का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसके वर्ण्य विषय की व्याख्या करें।

Ans. वैदिक साहित्य में साम का महत्व नितान्त गौरवमय माना जाता है। 'बृहद् देवता' का कहना है कि जो पुरुष साम को जानता है वही वह वेद के रहस्य को जानता है — 'सामानि यो वेत्ति स वेद तत्त्वम्'। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं सामवेद को अपना ही स्वरूप बतलाया है — 'वेदानां सामवेदोऽस्मि'। गीता में इसे 'प्रणवः सर्ववेदेषु' सभी वेदों में प्रणव ओंकार कहा गया है। अनुगीता में भी इसे 'ओङ्कार सर्ववेदानाम्' कहकर इसका महत्त्व प्रतिपादित किया गया है। स्वयं ऋग्वेद और अथर्ववेद भी साम की प्रशंसा करते हैं। ऋग्वेद में कहा गया है — 'जो विद्वान मनुष्य जागरणशील है उन्हीं को साम प्राप्त होते हैं परन्तु जो निद्रालु हैं वे सामगायन में कभी प्रवीण नहीं हो सकते'। सामगायन की परंपरा अत्यन्त प्राचीन है। ऋग्वेद में वैरूप, बृहत्, रैवत, गायत्र, भद्र आदि अनेक सामों के नाम प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में भी रथन्तर, वैखानस, शाक्वर, वैराज, रैवत, अभीवर्त, वामदेव्य आदि साम उल्लिखित हैं। इसी प्रकार ब्राह्मणों में भी साम का उल्लेख बहुतायत से मिलता है। ये सारे उल्लेख इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि सामगायन की परंपरा अत्यन्त प्राचीन है। ऋग्वेद के समय में भी सामगायन का प्रचार था।

बृहदारण्यक उपनिषद् में 'साम' शब्द की व्युत्पत्ति देते हुए कहा गया है — 'सा च अमश्चेति तत्साम्नः सामत्वम्।' यहाँ 'सा' शब्द का अर्थ ऋक्; 'अम्' शब्द का अर्थ हुआ ऋक् के साथ सम्बद्ध स्वर प्रधान गायन। इसी लिए जिन ऋचाओं पर सामगान किया जाता है उन्हें सामयोनि कहा जाता है। इस आधार पर सामवेद का स्वरूप भी स्पष्ट हो जाता है। इसमें उद्गाता नामक पुरोहित द्वारा गायी जानेवाली ऋग्वेद की ऋचाओं का ही संचयन है। इस प्रकार ऋक् मन्त्रों पर गाया जानेवाला स्वर-बद्ध गान ही 'साम' कहलाते हैं। सामगान कुछ निश्चित ऋचाओं पर ही किया गया है। ऐसा नहीं है कि स्वयं सामवेद में ही कुछ ऋचाएँ ऐसी हैं जो सामयोनि नहीं हैं। ऐसी ऋचाएँ इसके उत्तरार्द्ध भाग में पायी जाती हैं।

सामवेद की अनेक संहिताओं में आज केवल तीन ही उपलब्ध हैं : कौथुम संहिता, जैमिनीय संहिता और राणायनीय संहिता।

वर्ण्य विषय — सामवेद के दो भाग हैं — आर्चिक और गान।
आर्चिक के भी दो भाग हैं — पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक। पूर्वार्चिक में 6 अध्याय हैं। इनमें प्रथम अध्याय को आग्नेय काण्ड कहते हैं। इसमें अग्नि देवता से संबंधित मन्त्रों का संकलन है। द्वितीय से चतुर्थ अध्याय तक इन्द्र विषयक मन्त्रों का ~~संग्रह है संकलन है~~। संग्रह है। इसे ऐन्द्र पर्व कहते हैं। पञ्चम अध्याय 'पवमान पर्व' है। इसमें सोमविषयक मन्त्र संगृहीत हैं। ये सभी ऋग्वेद के नवम मण्डल से संगृहीत हैं। षष्ठ अध्याय 'आरण्यक पर्व' है। इनमें प्रथम से पञ्चम अध्याय तक की ऋचाएँ 'सामगान' और षष्ठ अध्याय की ऋचाएँ 'आरण्यगान' के नाम से अभिहित हैं। पूर्वार्चिक में कुल 650 ऋचाएँ हैं। इसमें 175 ऋचाएँ साम से सम्बद्ध हैं। इन ऋचाओं का प्रयोग केवल यज्ञ में होता था।

उत्तरार्चिक में नौ प्रपाठक हैं। इनमें प्रथम पाँच प्रपाठकों में दो-दो भाग और अन्तिम चार प्रपाठकों में तीन-तीन अर्धक हैं। समस्त मन्त्रों की संख्या 1225 है। इनमें 400 गीत हैं। इसमें यज्ञों की दृष्टि से गीतों का संग्रह किया गया है। दोनों में कुल 1875 मन्त्र हैं। ~~अ~~ इनमें 367 मन्त्र दोनों में पुनरुक्त हैं। अन्य मतानुसार दोनों में 1549 ~~मन्त्र हैं~~ ऋचाएँ हैं। इनमें 75 ऋचाओं को छोड़कर शेष ऋग्वेद से ली गई हैं। पूर्वार्चिक में मूलभूत ऋचाएँ संगृहीत हैं और उत्तरार्चिक में धुन पर गायी जानेवाली तृचों एवं प्रगाथों का संग्रह है। इस प्रकार उत्तरार्चिक पूर्वार्चिक का पूरक प्रतीत होता है।

गान-मन्त्रों के चार प्रकार हैं — ग्रामगान, आरण्यगान, ऊहगान और उह्यगान। ग्रामगान को वेयगान या प्रकृतिगान भी कहते हैं। पूर्वार्चिक का प्रथम से पंचम अध्याय तक ग्रामगान के अन्तर्गत आता है। इसमें अग्नि, इन्द्र, पवमान आदि देवों के स्तुतिपरक ऋचाएँ हैं। आरण्यगान को 'रहस्यगान' भी कहते हैं। इसमें साम के मूलभूत सप्तगानों के अर्क द्वन्द्व व्रत, शुक्रिय और महासाम्नी का समावेश आरण्यगान के अन्तर्गत होता है। संभवतः इन गानों का स्वरूप आरण्य संगीत की स्वर-लहरियों से निर्मित हुआ हो इसीलिए इसका नाम 'आरण्यगान' पड़ा हो। ये दोनों ही गान मूलभूत गान हैं। किन्तु संगीत-शैली की विशेषताओं के कारण इनमें अन्तर है। ~~उह्यगान और~~ ऊहगान और उह्यगान का आधार ग्रामगान और आरण्यगान है

(ऊहगानं ग्रामे गेयवत् ऊह्यगानमारण्यगेयवत्) | ग्रामगान का परिवर्तित एवं परिवर्द्धित रूप ऊहगान में और आरण्यगान का परिवर्तित एवं परिवर्द्धित रूप ऊह्यगान में उपलब्ध होता ऐसा प्रतीत होता है कि गायकों की स्वतन्त्र प्रतिभा और उर्वर कल्पना के कारण ही ग्रामगान और आरण्यगान में परिवर्तन और परिवर्द्धन हुआ है | इस प्रकार ग्रामगानों की परंपरागत धुनों के आवश्यक परिवर्तन ऊहगान और आरण्यगान के आवश्यक परिवर्तन ऊह्यगान कहलाए |